भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक

लँगड़ा बुखार (बीक्यू)

यह तीव्र संक्रामक और अत्यधिक घातक जीवाणु जनित रोग है जो गाय, भैंस, भेड़ और बकरियों को प्रभावित करता हैं। सामान्यत: 6-24 महीने के स्वस्थ मवेशी इससे ज्यादातर प्रभावित होते हैं। यह क्लोस्ट्रीडियम चोवेयाई नामक जीवाणु के कारण होता है जिसके स्पोर मिट्टी में पाए जाते है। इसका संक्रमण मिट्टी द्वारा होता है और आम तौर पर इस रोग का प्रकोप बरसात के मौसम के दौरान होता है

संचरण

- जीवाणु से संदूषित चारा के खाने से

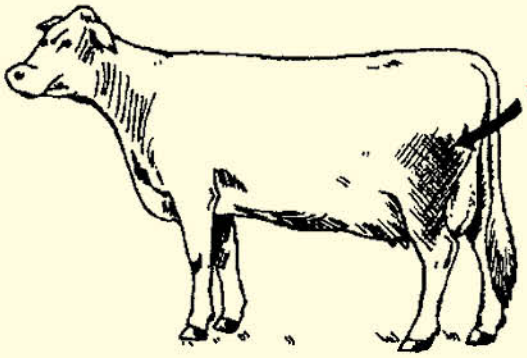
सूजी हुई मांसपेशिया

लक्षण

- तेज बुखार (106-108° F)
- भूख कम लगना
- सुस्ती
- चारा खाना छोड़ना और जुगाली का बंद होना
- पीछे के पैरो में लँगड़ापन
- जांघ और पुट्ठे के हिस्से पर सूजन जो पहले गर्म होती है तथा बाद में ठंडी और दर्द रहित हो जाती है और वहा पर छूने पर गैस का महसूस होना
- अधिकतर पशुओं में उचित उपचार न मिलने के कारण 12-48 घंटे के भीतर मृत्यु हो जाती है

निदान

- उम्र, शरीर की स्थिति और मौसम के अनुमान से
- रोग के लक्षणो के आधार पर
- शव परीक्षण से - गैसीय और काले रंग की पैर की मांसपेशिया
- शव नमूने में जीव के अलगाव और पहचान से

उपचार

- **लँगड़ा बुखार के लक्षण दिखने पर तुरंत अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से उपचार कराये।**

बचाव और रोगथाम

- संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखे
- प्रभावित क्षेत्र में चराई की अनुमति न दें
- संदुषित चारें को नष्ट कर दें

टीकाकरण

- हर साल बरसात के मौसम से पहले बीक्यू का टीका पशुओं मे लगाए
- **अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे**

*****

संकलित और संपादित
डॉ. अवधेश प्रजापति, डॉ. मंजूनाथ रेड्डी, डॉ. योगीशाराध्या आर., डॉ. जी. एस. देसाई, डॉ. जी. गोविन्दराज

प्रकाशक
निदेशक
भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, पोस्ट बॉक्स-6450, यलहंका, बेंगलुरु-560064, कर्नाटक